स्वप्न का मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त :-

स्वप्न के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त द्वारा स्वप्न की व्याख्या व्यक्ति की चेतन एवं अचेतन अनुभूतियों के रूप में की गयी है। फ्रायड, एडलर एवं युंग ने स्वप्न के मनोवैज्ञानिक विश्लेषणों के आधार पर यह बतलाया कि स्वप्न सार्थक एवं उद्देश्य पूर्ण होते हैं। इन्होंने स्वप्न की व्याख्या विशेष सिद्धान्त के आधार पर किये हैं जो निम्नांकित हैं —

फ्रायड का इच्छापूर्ति का सिद्धान्त —

फ्रायड के स्वप्न सिद्धान्त को 'इच्छापूर्ति का सिद्धान्त' भी कहा जाता है। फ्रायड ने 1900 ई० में अपनी पुस्तक 'स्वप्न-विश्लेषण' (The Interpretation of Dream) का प्रकाशन किया जिसमें स्वप्न के सिद्धान्त की विस्तृत वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की गयी। फ्रायड का यह मानना था कि स्वप्न का संबंध अचेतन की दमित इच्छाओं से होती है। अचेतन की इच्छाएँ समाप्त नहीं होती, बल्कि चेतन में आने का अवसर ढूँढती रहती हैं और मौका मिलने पर अपनी तुष्टि चाहती हैं। ~~स्वप्न~~ निद्रा में चूँकि चेतन शिथिल हो जाती है तो अचेतन की इच्छाएँ स्वप्न के माध्यम से अपनी इच्छाओं की पूर्ति करती हैं, इसी कारण फ्रायड के सिद्धान्त को 'इच्छापूर्ति का सिद्धान्त' कहा जाता है। इस सिद्धान्त के मूल तत्व निम्न हैं —

→ स्वप्न नींद का संरक्षक है। स्वप्न में ego का अचेतन भाग कुछ अधिक सक्रिय हो जाता है और अपनी दमित इच्छाओं को स्वप्न के रूप में प्रकट होने की आज्ञा दे देता है। परिणामस्वरूप व्यक्ति की नींद टूटने के बजाय और लंबी हो जाती है।

→ स्वप्न निरर्थक व अकारण न होकर निश्चित और सार्थक होता है।

Scanned with CamScanner

→ फ्रायड के अनुसार मन के तीन स्तर होते हैं— चेतन, अवचेतन तथा अचेतन। चेतन में उन इच्छाओं का प्रवेश नहीं होता है, जो असामाजिक व अनैतिक होती हैं, क्योंकि यह वास्तविकता सिद्धान्त पर कार्य करता है। ऐसी इच्छाओं का दमन अचेतन में हो जाता है, और ये हमेशा चेतन में आने का प्रयास करते रहती हैं।

→ निद्रावस्था में चेतन स्तर में शिथिलता के कारण ये दमित इच्छाएँ व विचार रूप बदलकर स्वप्नों के माध्यम से अपनी संतुष्टि कर लेती हैं।

→ स्वप्न की व्याख्या व्यक्ति के मानसिक इतिहास को जानकर की जा सकती है और इसको जानने की विधि मुक्त साहचर्य विधि है।

→ अचेतन की इच्छाएँ अनैतिक व समाज-विरोधी होती हैं। इसलिए स्वप्न की अवस्था में ये वास्तविक रूप से प्रकट न होकर प्रतीकों के रूप में प्रकट होती हैं।

→ स्वप्न प्रतिबन्धक (Dream Censor)— फ्रायड के अनुसार जाग्रत अवस्था में चेतन, अवचेतन तथा अचेतन के बीच आदर्श भावना एक प्रतिबन्धक का कार्य करती है, जिसके फलस्वरूप अनैतिक, असामाजिक एवं कामुक इच्छाएँ चेतना में नहीं आ पाती हैं। निद्रावस्था में प्रतिबंधक का भय कम हो जाता है जिसके परिणामस्वरूप अचेतन की इच्छाएँ रूप बदलकर स्वप्न में प्रकट होती हैं। प्लेटो ने कहा है— "जिन कार्यों को पापी अपने वास्तविक जीवन में करते हैं, उन्हीं कार्यों का स्वप्न देखकर साधु लोग संतोष करते हैं"

→ स्वप्न विचार— फ्रायड के अनुसार स्वप्न निर्माण के पीछे मुख्यतः दो प्रकार की मानसिक प्रवृत्तियाँ क्रियाशील रहती हैं—

NOTES

Scanned with CamScanner

(i) व्यक्त विषय – इससे तात्पर्य स्वप्न के उन विषयों से एवं घटनाओं से होता है जिसे व्यक्ति प्रत्यक्षतः स्वप्न में देखता है और नींद खुलने पर उसका वर्णन करता है।

(ii) अव्यक्त विषय – इससे तात्पर्य स्वप्न में देखे गये घटनाओं एवं तथ्यों के पीछे छिपे अर्थों से होता है, जिसका पता स्वप्न विश्लेषण के बाद ही हो पाता है।

युंग का स्वप्न सिद्धान्त :-

युंग फ्रायड के शिष्य थे, परन्तु उनसे अलग होकर वे विश्लेषणात्मक स्कूल की स्थापना की। युंग के स्वप्न सिद्धान्त को स्वप्न का स्वतः प्रतीकात्मक सिद्धान्त (Auto symbolic theory of dream) भी कहा जाता है।

युंग ने अचेतन को दो भागों में बाँटा है- व्यक्तिगत अचेतन तथा जातीय या सामूहिक अचेतन। व्यक्तिगत अचेतन में प्रत्येक व्यक्ति के निजी अनुभवों से संबंधित दमित इच्छाएँ होती है। जिसे युंग ने अचेतन का ऊपरी स्तर कहा। सामूहिक अचेतन में उसके पूर्वजों की इच्छाएँ, संस्कार आदि संचित होते है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थानान्तरित होते रहते है। जिसे युंग ने अचेतन का निचली स्तर माना। युंग के अनुसार स्वप्न में दोनों ही अचेतन की इच्छाओं की अभिव्यक्ति होती है अर्थात् स्वप्नों के लिए दमन आवश्यक नहीं है।

युंग ने अपने सिद्धान्त में फ्रायड के कामुक इच्छा (libido) को अस्वीकार कर दिया और उसके जगह पर जीने की इच्छा (will of live) को ही मौलिक इच्छा बतलाया।

युंग ने अपने सिद्धान्त में इस बात पर विशेष बल डाला कि स्वप्न द्वारा भविष्य की घटनाओं का संकेत भी मिलता है न कि सिर्फ भूत की अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति ही होती है।

Scanned with CamScanner

एडलर का स्वप्न सिद्धान्त –

एडलर जो फ्रायड के ही शिष्य थे और उनसे अलग होकर मनोविज्ञान का एक नये स्कूल का प्रतिपादन किये जिसे वैयक्तिक मनोविज्ञान (Individual Psychology) कहा गया।

एडलर ने अपने स्वप्न सिद्धान्त में फ्रायड के दमित कामुक इच्छाओं के महत्व को अस्वीकार कर दिया परन्तु मानसिक संघर्ष के महत्व को स्वीकार किया। एडलर का विचार था कि प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में श्रेष्ठता के उच्च शिखर पर पहुँचना चाहता है, जिसे उन्होंने "श्रेष्ठता की प्रयास प्रवृत्ति" कहा है। परन्तु इसकी पूर्ति वातावरण की जटिलताओं एवं कठिनाइयों के कारण नहीं हो पाती है। जिससे उसमें मानसिक संघर्ष एवं निराशा उत्पन्न होती है जिसका समाधान व्यक्ति स्वप्न के माध्यम से करता पाया जाता है। एडलर ने यह भी बतलाया कि स्वप्न का संबंध व्यक्ति के जीवन की वर्तमान घटनाओं से होता है। इन घटनाओं से उत्पन्न समस्याओं का समाधान व्यक्ति अपने स्वप्न में करता है।

स्पष्टतः कहा जा सकता है कि स्वप्न के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त एक आधुनिक सिद्धान्त है, जो की स्वप्न को उद्देश्यपूर्ण एवं सार्थक दृष्टिकोण प्रदान करता है। इससे यह भी पता चलता है कि व्यक्ति स्वप्न के माध्यम से अपनी अनैतिक एवं अतृप्त इच्छाओं की पूर्ति तो करता ही है, साथ ही मानसिक संघर्ष एवं विभिन्न समस्याओं से उत्पन्न तनावों को भी अचेतन रूप से कम करने का प्रयास करता है।

Scanned with CamScanner